

अरावली ग्रीन वाल परियोजना का शुभारंभ

चर्चा में क्यों?

25 मार्च, 2023 को केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने हरियाणा के गुरुग्राम ज़िले के टकिली गाँव में अंतरराष्ट्रीय वन दविस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में 'अरावली ग्रीन वाल प्रोजेक्ट' का उद्घाटन किया।

प्रमुख बिंदु

- अरावली ग्रीन वाल प्रोजेक्ट का उद्देश्य पाँच राज्यों में फैली अरावली पर्वत श्रृंखला के लगभग 5 कमी. के बफर क्षेत्र को हरति बनाना है।
- कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने वानिकी के माध्यम से मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण का मुकाबला करने के लिये एक कार्ययोजना और भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा कृषि वानिकी पर प्रकाशित एफएक्यू का अनावरण किया।
- अरावली ग्रीन वाल प्रोजेक्ट के तहत वनरोपण, पुनः वनीकरण और जल स्रोतों की बहाली के माध्यम से न सिर्फ अरावली के हरति क्षेत्र और जैव विविधता में बढ़ोतरी होगी, बल्कि क्षेत्र की मट्टी की उर्वरता, पानी की उपलब्धता और जलवायु में भी सुधार होगा।
- यह परियोजना स्थानीय समुदायों को रोज़गार के अवसर, आय सृजन और पारस्थितिकी तंत्र सेवाएँ प्रदान करके लाभान्वित करेगी।
- हरियाणा में अरावली ग्रीन वाल प्रोजेक्ट के शुरुआती चरण में, परियोजना के तहत 75 जल स्रोतों का कार्याकल्प किया जाएगा, जसिकी शुरुआत 25 मार्च को अरावली परदृश्य के प्रत्येक ज़िले में पाँच जल स्रोतों से हुई।
- परियोजना में अरावली क्षेत्र में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान और जल संसाधनों का संरक्षण भी शामिल होगा। यह परियोजना गुरुग्राम, फरीदाबाद, भिवानी, महेंद्रगढ़ और रेवाड़ी ज़िलों में बंजर भूमि को शामिल करेगी।
- स्वैच्छिक संगठन, सोसाइटी फॉर जयिडनफॉरमेटकिस एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट और एनजीओ, आईएमगुरुग्राम क्रमशः बंधवाड़ी और घाटबंध में जल स्रोतों के पुनरुद्धार के लिये श्रमदान के उद्देश्य से लोगों को जुटाने के काम में लगे हुए हैं।
- उल्लेखनीय है कि अरावली ग्रीन वाल प्रोजेक्ट केंद्रीय वन मंत्रालय के भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण से निपटने के लिये देश भर में ग्रीन कॉरडोर तैयार करने के वजिन का हिससा है। इस परियोजना में हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली राज्य शामिल हैं जहाँ 60 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर अरावली की पहाड़ियाँ फैली हैं।
- इस परियोजना में तालाबों, झीलों और नदियों जैसे सतही जल स्रोतों के कार्याकल्प और पुनरस्थापन के साथ-साथ झाड़ियाँ, बंजर भूमि और खराब वन भूमि पर पेड़ों और झाड़ियों की मूल प्रजातियों को लगाना शामिल होगा।
- यह परियोजना स्थानीय समुदायों की आजीविका बढ़ाने के लिये कृषि वानिकी और चरागाह विकास पर भी ध्यान केंद्रित करेगी।
- अरावली ग्रीन वाल प्रोजेक्ट के नमिनलखिति उद्देश्य हैं-
 - अरावली रेंज के पारस्थितिकी सेहत में सुधार।
 - थार मरुस्थल के पूरव की ओर वसितार को रोकने और हरति बाधाओं को बनाकर भूमि क्षरण को कम करना, जो मट्टी के कटाव, मरुस्थलीकरण और धूल भरी आंधियों को रोकेंगे।
 - यह हरति दीवार अरावली क्षेत्र में देशी वृक्ष प्रजातियों को लगाकर, वन्यजीवों के लिये आवास प्रदान करके तथा पानी की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार करके अरावली रेंज की जैव विविधता और पारस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बढ़ाने के लिये कार्बन पृथक्करण और जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद करेगी।
 - वनीकरण, कृषि-वानिकी और जल संरक्षण गतिविधियों से स्थानीय समुदायों को जोड़कर सतत् विकास और आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देना जसिसे आय, रोज़गार, खाद्य सुरक्षा और सामाजिक लाभ सामने आएंगे।
 - इस परियोजना को केंद्र और राज्य सरकारों, वन विभागों, अनुसंधान संस्थानों, नागरिक समाज संगठनों, नजी क्षेत्र की संस्थाओं और स्थानीय समुदायों जैसे वभिन्न हतिधारकों द्वारा नषिपावति किया जाएगा। परियोजना की सफलता सुनिश्चित करने के लिये पर्याप्त वित्तपोषण, तकनीकी कौशल, नीति समन्वय और जन-जागरूकता आदि पर काम किया जाएगा।
 - यूएनसीसीडी (यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन टू कामबैट डायवर्सिफिकेशन), सीबीडी (कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डायवर्सिटी) और यूएनएफसीसीसी (यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज) जैसे वभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के तहत भारत की प्रतबिद्धताओं के लिये योगदान करना।
 - पर्यावरण संरक्षण और हरति विकास में वैश्विक लीडर के रूप में भारत की छवि को आगे बढ़ाना।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/aravalli-green-wall-project>

